''मीठे बच्चे – अपने आपसे पूछो कि मैं कर्मेन्द्रिय-जीत बना हूँ, कोई भी कर्मेन्द्रिय मुझे धोखा तो नहीं देती हैं!''

प्रश्नः- कर्मातीत बनने के लिए तुम बच्चों को अपने आपसे कौन-सा वायदा करना है?

उत्तरः- अपने से वायदा करो कि कोई भी कर्मेन्द्रिय कभी भी चलायमान हो नहीं सकती। मुझे अपनी कर्मेन्द्रियाँ वश में करनी हैं। बाबा ने जो भी डायरेक्शन दिये हैं, उन्हें अमल में लाना ही है। बाबा कहे – मीठे बच्चे, कर्मातीत बनना है तो कोई भी कर्मेन्द्रिय से विकर्म मत करो। माया बड़ी प्रबल है। आँखें धोखेबाज हैं इसलिए अपनी सम्भाल करो।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) स्वयं में जो भी बुरी आदतें हैं – उनकी जांच कर उन्हें निकालने के लिए मेहनत करनी है। अपना सच्चा-सच्चा पोतामेल रखना है। बाप के डायरेक्शन पर चलना है।
2) ऐसा कोई कर्म नहीं करना है, जिससे बाप का नाम बदनाम हो। अपनी उन्नति का ख्याल रखना है। जरा भी कुदृष्टि नहीं रखनी है।

वरदानः- स्थूल वा सूक्ष्म में हर फरमान को पालन करने वाले सम्पूर्ण फरमानबरदार भव

स्थूल फरमान पालन करने की शक्ति उन्हीं बच्चों में आ सकती है जो सूक्ष्म फरमान पालन करते हैं। सूक्ष्म और मुख्य फरमान है निरन्तर याद में रहो वा मन-वचन-कर्म से पवित्र बनो। संकल्प में भी अपवित्रता व अशुद्धता न हो। यदि संकल्प में भी पुराने अशुद्ध संस्कार टच करते हैं तो सम्पूर्ण वैष्णव वा सम्पूर्ण पवित्र नहीं कहेंगे। इसलिए कोई एक संकल्प भी फरमान के सिवाए न चले तब कहेंगे सम्पूर्ण फरमानबरदार।

स्लोगनः- बाप को जानकर दिल से बाबा कहना यह सबसे बड़ी विशेषता है।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

एकरस स्थिति बनाने के लिए कर्मयोगी बनो। कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाए वह स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा। नॉलेज द्वारा जानेगा – इसका यह पार्ट चल रहा है। वह अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखेगा और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी होकर देखेगा, यही एकरस स्थिति बनाने का साधन है।

''मीठे बच्चे – सदा इसी खुशी में रहो कि स्वयं भगवान हमें टीचर बनकर पढ़ाते हैं, हम उनसे राजयोग सीख रहे हैं, प्रजा योग नहीं''

प्रश्नः- इस पढ़ाई की खूबी कौन-सी है? तुम्हें कब तक पुरुषार्थ करना है?

उत्तरः- यह पढ़ाई जो बहुत समय से करते आ रहे हैं, उनसे नये बच्चे तीखे चले जाते हैं। यह भी खूबी है जो 3 मास के तीखी बुद्धि वाले (तीव्र पुरुषार्थी) नये बच्चे पुरानों से भी आगे जा सकते हैं। तुम्हें पुरुषार्थ तब तक करना है जब तक पूरे पास न हो, कर्मातीत अवस्था न हो, सब हिसाब-किताब छूट न जायें।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) इस हीरे तुल्य अनमोल जीवन को कौड़ियों के पीछे नहीं गँवाना है। मौत सामने खड़ा है इसलिए अपना सब कुछ रुहानी सेवा में सफल करना है।
2) पढ़ाई और पढ़ाने वाले से सच्ची प्रीत रखनी है। भगवान हमको पढ़ाने आते हैं, इस खुशी में रहना है।

वरदानः- कैचिंग पावर द्वारा अपने असली संस्कारों को कैच कर उनका स्वरुप बनने वाले शक्तिशाली भव

पुरुषार्थ का मुख्य आधार कैचिंग पावर है। जैसे साइंसदान बहुत पहले के साउण्ड को कैच करते हैं ऐसे आप साइलेन्स की शक्ति से अपने आदि दैवी संस्कार कैच करो, इसके लिए सदैव यही स्मृति रहे कि मैं यही था और फिर बन रहा हूँ। जितना उन संस्कारों को कैच करेंगे उतना उसका स्वरूप बनेंगे। 5 हजार वर्ष की बात इतनी स्पष्ट अनुभव में आये जैसे कल की बात है। अपनी स्मृति को इतना श्रेष्ठ और स्पष्ट बनाओ तब शक्तिशाली बनेंगे।

स्लोगनः- ब्राह्मण जीवन का श्वास खुशी है, शरीर भल चला जाए लेकिन खुशी न जाए।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

एक धक से सौदा करने वाले एक के होने कारण सदा एकरस रहते हैं। बाकी जो थोड़ा-थोड़ा करके सौदा करते हैं – एक के बजाए दो नाव में पाँव रखने वाले हैं, वह सदा कोई न कोई उलझन की हलचल में, एकरस नहीं बनते हैं, इसलिए सौदा करना है तो सेकण्ड में करो। दिल के टुकड़े-टुकड़े नहीं करो।

''मीठे बच्चे – कालों का काल बाबा आया है, तुम्हें काल पर जीत प्राप्त कराने, मनमनाभव के मन्त्र से ही तुम काल पर जीत पायेंगे''

प्रश्नः- रुहानी बाप तुम रुहानी यात्रियों को कौन-सी एक विशेष शिक्षा देते हैं?

उत्तरः- हे रुहानी यात्री – तुम देह-अभिमान छोड़ देही-अभिमानी बनो। रावण ने आधाकल्प से तुम्हें देह-अभिमानी बनाया, अब आत्म-अभिमानी बनो। यह रुहानी ज्ञान सुप्रीम रूह ही तुम्हें देता और कोई दे नहीं सकता।

गीतः- ओम् नमो शिवाय....

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) रुहानी यात्रा करनी और करानी है। स्वयं को सतोप्रधान बनाने के लिए एक बाप को याद करना है। आत्म-अभिमानी बनने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करना है।

2) काल पर विजय पाने के लिए बाप की शिक्षा को ध्यान पर रखना है। अपने को रूह समझ रूहों को ज्ञान देना है।

वरदानः- बापदादा के कर्तव्य को अपना निशाना बनाने वाले मास्टर मर्यादा पुरुषोत्तम भव

कहा जाता है ''अपनी घोट तो नशा चढ़े'' दूसरे की कमाई में कभी भी आँख नहीं जानी चाहिए। दूसरे के नशे को निशाना बनाने के बजाए बापदादा के गुण और कर्तव्य को निशाना बनाओ। बापदादा के साथ अधर्म विनाश और सतधर्म की स्थापना के कर्तव्य में मददगार बनो। अधर्म विनाश करने वाले अधर्म का कार्य वा दैवी मर्यादा को तोड़ने का कार्य कर नहीं सकते, वे मास्टर मर्यादा पुरुषोत्तम होते हैं।

स्लोगनः- नॉलेजफुल बन व्यर्थ प्रश्नों को स्वाहा कर दो तो समय बच जायेगा।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

कोई भी संकल्प आये तो ऊपर देकर स्वयं निःसंकल्प होकर चलते जाओ। विचार देना, इशारा देना यह दूसरी बात है, हलचल में आना – यह दूसरी बात है। तो सदा एकरस। संकल्प दिया और निरसंकल्प बने। सदा ध्यान रहे कि मुझे कर्मेन्द्रियजीत बनना है। कोई एक कर्मेन्द्रिय की आकर्षण भी एक बाप का बनने नहीं देगी। एकरस स्थिति में स्थित होने नहीं देगी।

''मीठे बच्चे – तुम बाप के पास आये हो अपनी ऊंच तकदीर बनाने, जितना श्रीमत पर चलेंगे उतना ऊंच तकदीर बनेगी''

प्रश्नः- भक्ति की कौन-सी आदत अभी तुम बच्चों में नहीं होनी चाहिए?

उत्तरः- भक्ति में थोड़ा दु:ख होगा, बीमारी होगी तो कहेंगे हे राम, हे भगवान, हाय-हाय करने की आदत भक्ति में होती। अभी तुम्हें कभी भी मुख से ऐसे बोल नहीं निकालने हैं। तुम्हें तो अन्दर ही अन्दर मीठे बाबा को प्यार से याद करना है।

गीतः- तकदीर जगाकर आई हूँ...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) पढ़ाई के आधार पर अपनी तकदीर ऊंच बनानी है, मनुष्य से देवता बनना है। पावन बनकर वापिस घर जाना है फिर नई दुनिया में आना है।
2) हाथों से काम करते – एक बाप की याद में रहना है। कोई भी उल्टी बात न सुननी है, न सुनानी है।

वरदानः- सदा अपने पवित्र स्वरूप में स्थित रह गुण रूपी मोती चुगने वाले होलीहंस भव

आप होलीहंसों का स्वरूप है पवित्र और कर्तव्य है सदैव गुणों रूपी मोती चुगना। अवगुण रूपी कंकड कभी भी बुद्धि में स्वीकार न हो। लेकिन इस कर्तव्य को पालन करने के लिए सदैव एक आज्ञा याद रहे कि न बुरा सोचना है, न बुरा सुनना है, न बुरा देखना है, न बुरा बोलना है... जो इस आज्ञा को सदा स्मृति में रखते हैं वह सदा सागर के किनारे पर रहते हैं। हंसों का ठिकाना है ही सागर।

स्लोगनः- चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप में रहना – यही ब्रह्मा बाप की दिल-पसन्द गिफ्ट है।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

सदा अचल-अडोल रहने के लिए स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति में सदा बिजी रहो, सर्व के प्रति शुभ भावना रखो। सम्बन्ध के आधार पर पार्ट नहीं, सेवा के सम्बन्ध से पार्ट बजाओ। दूसरा विनाशी साधनों को सहारा वा आधार नहीं बनाओ। यह सब निमित्त मात्र हैं, सेवा के प्रति हैं। सेवा अर्थ कार्य में लगाया और न्यारे। साधनों की आकर्षण में मन आकर्षित नहीं होना चाहिए।

''मीठे बच्चे – इस पुरानी दुनिया वा देहधारियों से कभी दिल नहीं लगाना, दिल लगाई तो नसीब फूट जायेगा''

प्रश्नः- बाप ने बच्चों को इस नाटक का कौन-सा गुह्य राज़ सुनाया है?

उत्तरः- बच्चे – अभी यह नाटक खत्म होने वाला है इसलिए सभी आत्माओं को यहाँ हाज़िर होना ही है। सब धर्मों की आत्मायें अभी यहाँ हाज़िर होंगी क्योंकि सर्व का बाप यहाँ हाज़िर हुआ है। सबको बाप के आगे सलामी भरने आना ही है। सब धर्म की आत्मायें मनमनाभव का मन्त्र लेकर जायेंगी। वह कोई मध्याजीभव के मन्त्र को धारण कर चक्रवर्ती नहीं बनेंगी।

गीतः- दिल का सहारा टूट न जाये...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) इस पुरानी दुनिया में रहते पुरुषार्थ कर सर्वगुण सम्पन्न जरूर बनना है। इस पुराने शरीर वा पुरानी दुनिया से दिल नहीं लगानी है। नसीबदार बनना है।

2) आत्म-अभिमानी और परमात्म-अभिमानी रहना है। इस कयामत के समय में बाप से कुछ भी छिपाना नहीं है। अविनाशी सर्जन से राय लेते रहना है।

वरदानः- संगदोष से दूर रह सदा बाप की समीपता का भाग्य प्राप्त करने वाले पास विद आनर भव

यदि बाप के समीप रहना पसन्द है तो कभी कोई भी संगदोष से दूर रहना। कई प्रकार के आकर्षण पेपर के रूप में आयेंगे लेकिन आकर्षित नहीं होना। संगदोष कई प्रकार का होता है, व्यर्थ संकल्पों वा माया की आकर्षण के संकल्पों का संग, सम्बन्धियों का संग, वाणी का संग, अन्नदोष का संग, कर्म का संग... इन सब संगदोषों से अपने को बचाने वाले ही पास विद आनर बनते हैं।

स्लोगनः- आप फरिश्ता बनो तो परिस्थितियों में बाप स्वयं आपकी छत्रछाया बन जायेंगे।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

सदा एकरस, अचल-अडोल बनने और बनाने की विशेष शक्ति यह ड्रामा की प्वाइंट है। इसे शक्ति के रूप में धारण करने वाला कभी हार नहीं खा सकता, लेकिन पहले ड्रामा की बिन्दी लगाकर व्यर्थ संकल्पों को शुद्ध संकल्पों में परिवर्तन करो। फिर माया के आने वाले अनेक प्रकार के विघ्नों को ईश्वरीय लगन के आधार से समाप्त करो।

''मीठे बच्चे – अपना सब कुछ ईश्वरीय सेवा में सफल कर भविष्य बना लो क्योंकि मौत सिर पर है''

प्रश्नः- ज्ञान सुनते हुए भी बच्चों में उसकी धारणा क्यों नहीं होती है?

उत्तरः- क्योंकि विचार सागर मंथन करना नहीं आता है। बुद्धियोग देह और देह के सम्बंधों में लटका हुआ है। पहले जब बुद्धि से मोह निकले, तब कुछ धारणा भी हो। मोह ऐसी चीज़ है, जो एकदम बन्दर बना देता है इसलिए बाप बच्चों को पहला-पहला वायदा याद दिलाते हैं – देह सहित, देह के सब सम्बन्धों को भूलो और मुझे याद करो।

गीतः- भोलेनाथ से निराला...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) विनाश के पहले अपना सब कुछ सफल करना है। यह कयामत का समय है इसलिए पावन जरूर बनना है।
2) देहधारियों से मोह निकाल मोहजीत बनना है। देह-अभिमान जो पहला नम्बर दुश्मन है उस पर विजय पानी है। और सब संग तोड़, बाप से बुद्धियोग जोड़ना है।

वरदानः- याद के मंत्र द्वारा संकल्प और कर्म में अविनाशी सिद्धि प्राप्त करने वाले सिद्धि स्वरूप भव

आप बच्चे आलमाइटी गवर्मेन्ट के मैसेन्जर हो इसलिए कोई से भी डिस्कस करने में अपना माइन्ड डिस्टर्ब नहीं करना। याद का मन्त्र यूज़ करना। जैसे कोई वाणी से या अन्य किसी तरीके से वश नहीं होते हैं तो मन्त्र-जन्त्र करते हैं, आपके पास आत्मिक दृष्टि का नेत्र और मनमनाभव का मन्त्र है जिससे अपने संकल्पों को सिद्ध कर सिद्धि स्वरूप बन सकते हो।

स्लोगनः- एक्शन कॉनसेस के बजाए सोल कॉनसेस बनो।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

एकरस का अर्थ यह नहीं कि पुरुषार्थ की रफ्तार सदा एक जैसी हो। एकरस अर्थात् सदा उड़ती कला की महसूसता रहे। सर्व सम्बन्धों की अविनाशी तार एक से जुटी हुई हो। एक बाप दूसरा न कोई – यह दृढ़ संकल्प हो, एक भी सम्बन्ध कम न हो, सर्व सम्बन्धों की डोर एक से बंधी हुई हो तब एकरस स्थिति स्वत: रहेगी।

''परमात्म प्यार की पात्र आत्मायें दु:खियों को सुख की अंचली दो, व्यर्थ को समाप्त कर समर्थ बनो और समय को समीप लाओ''

- आज बापदादा अपने चारों ओर के परमात्म प्यारे बच्चों को देख रहे हैं।
- समय की समीपता अनुसार व्यर्थ संकल्प यह भी अपवित्रता की निशानी है। सारे दिन में यह भी चेक करो कि कोई भी व्यर्थ संकल्प अभिमान का वा अपमान का अपने तरफ खींचता तो नहीं है?
- दु:ख और अशान्ति चारों ओर भिन्न-भिन्न स्वरूप में बढ़ रही है। उसके लिए पवित्रता का वायबेशन आवश्यक है। अभी आत्माओं को एक्स्ट्रा सकाश चाहिए। वह है मन्सा सेवा द्वारा सकाश देना, हिम्मत देना, उमंग-उत्साह देना। तो इस समय डबल सेवा की आवश्यकता है।
- अभी मन्सा द्वारा बाप के समीप लाओ। अपने चेहरे और चलन द्वारा, आपके नयनों में बाप प्रत्यक्ष हो।
- वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। जब सवेरे आंख खुलती है तो पहले-पहले शिवबाबा को गुडमार्निंग करो।

वरदान:- अपनी मूर्त से बाप और शिक्षक की सूरत को प्रत्यक्ष करने वाले अनुभवी मूर्त भव

अपने असली पोजीशन में ठहरना – यही याद की यात्रा है, जो हूँ, जिसका हूँ – उसमें स्थित रहो, इसी असली स्वरूप के निश्चय और अनेक बार के विजय की स्मृति से सदा नशे की स्थिति के सागर में लहराते रहेंगे। जब सुखदाता के बच्चे हैं तो दु:ख की लहर आ कैसे सकती, सर्वशक्तिवान के बच्चे शक्तिहीन हो कैसे सकते! इसी पोजीशन के अनुभवों में रहो तो आपकी मूर्त से बाप वा शिक्षक की सूरत स्वत: प्रत्यक्ष होगी।

स्लोगन:- सत्यवादी वह है जिसके चेहरे और चलन में दिव्यता हो।

अव्यक्त इशारे

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

जब आप बच्चे अपने इस भ्रकुटि के तख्त पर, अकालमूर्त्त बन स्थित होंगे तो एकरस स्थिति के तख्त पर और बापदादा के दिल तख्त पर विराजमान हो सकेंगे। जब इस दैवी संगठन की मूर्त में एकरस स्थिति का प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार हो तब बापदादा की प्रत्यक्षता समीप आये इसके लिए हर एक को बापदादा के संस्कारों में समान बनना होगा।